धिक धिक पडो मारा सर्वा अंगने, जे न आव्या धणीने काम।
में ओलखी नव बावरया, मारा धणी सुंदर श्री धाम।। १० ।।

धिक्कार है मेरे सब अंगों को जो धनी के काम न आए और पहचान करके भी मूल सम्बन्ध को न निभा सके।

तमे तमारा गुण नव मूक्यां, में कीधी घणी दुष्टाई।
हूं महा निबल अति नीच थई, पण तमे नव मूकी मूल सगाई।। ११ ।।

हे धनी! मैंने बहुत दुष्टता की, परन्तु फिर भी आपने अपनी मेहर करनी नहीं छोड़ी। मैंने बहुत ही नीचता की है, पर आपने फिर भी मूल सम्बन्ध नहीं छोड़ा।

।। प्रकरण ।। २२ ।। चौपाई ।। ५५८ ।।

हवे वारी जाऊं वनराय वल्लभनी, जेहेनी सकोमल छाया।
गुण जोजो तमे ए वन ओखदी, दीठडे दूर जाय माया।। १ ।।

अब मैं उन धनी के वृक्षों पर बलिहारी जाती हूं, जिनकी सुन्दर छाया है और जिनको देखने से माया का रोग मिट जाता है।

हवे वारणां लऊं आंगणियो वेलूं, जिहां बेसो छो संझा समे साथ।
परियाण करो धाम चालवा, घर वाटडी देखाडो प्राणनाथ।। २ ।।

उस आंगन की बलिहारी जाती हूं, जहां सायंकाल सुन्दरसाथ के बीच में धनी बैठते थे और धाम चलने की सलाह करके घर (परमधाम) का रास्ता दिखाते थे।

वली वारणा लऊं आंगणियां, अने आस पास सहु साज।
जिहां बेसो उठो ऊभा रहो, वल्लभ मारा श्री राज।। ३ ।।

फिर न्योछावर होती हूं उस आंगन पर तथा वहां पर आस-पास रखे सब सामान पर जहां हमारे प्यारे श्री धाम धनी बैठते, उठते और खड़े रहते थे।

घणी विधे हूं घोली घोली जाऊं, मंदिर ने वली द्वार।
भामणां लऊं ते भोमतणां, जिहां वसो छो मारा आधार।। ४ ।।

खास कर मैं उस मकान पर, मकान के दरवाजे पर और उस भूमि पर जहां मेरे प्रीतम रहते थे, बलिहारी जाती हूं।

वारी जाऊं पलंग पाटी ओसीसा, तलाई सिरख ओछाड।
वली वारी जाऊं चंद्रवा, जिहां पोढो सुख सेज्याए।। ५ ।।

वारी जाती हूं उस पलंग पर, निवार पर, तकिया पर, गद्दा पर, रजाई पर, पिछौरी पर, चन्दोवा पर, सेज पर, जिस पर मेरे धनी लेटते थे।

हवे घोली घोली जाऊं झीलाने चाकला, घोली जाऊं मंदिरना थंभ।
जेणे थंभे करे धणी पोताने, जुगते वाल्या बंध।। ६ ।।

वारी जाती हूं उस गलीचा पर, गद्दी पर, और मकान के थम्भों पर, जिन थम्भों के धनी ने स्वयं अपने हाथ से बन्ध बांधे थे।

Nijanand App

बेसो छो जिहां बलवंत बलिया, जाऊं बलिहारी तेणे ठाम।
साथ सकल सवारो आवी बेसे, वरणवो धणी श्री धाम।।७।।

जहां सर्वशक्तिमान धनी स्वयं बैठते थे उस ठिकाने (जगह) पर बलिहारी जाती हूं। वहां सब साथ जल्दी-जल्दी पहले से आकर बैठ जाते थे और आप परमधाम का वर्णन करते थे।

मंदिर मांहें अनेक विध दीसे, जोगवाई पूरण सर्वे।
अनेक वार लऊं तेना भामणा, मारी वारी नाखूं जीवसूं देह।।८।।

मकान में जो सब प्रकार का सामान है उस पर अनेक बार बलिहारी जाऊं और मैं तन, मन, जीवन से कुर्बान होती हूं।

भले तमे देह धर्या मुझ कारण, करी अजवालूं टाल्यो भरम।
जीव मारो घणो कठण हतो, तमे नेत्रे गाली कीधो नरम।।९।।

हे धनी! आपने मेरे लिए अच्छा तन धारण किया। संशय मिटाकर ज्ञान का प्रकाश दिया। मेरा जीव तो बहुत ही कठोर था, जिसे आपने अपने प्रेम भरे नेत्रों से गलाकर नर्म कर दिया।

हवे चरण कमलना लऊं भामणियां, अने भामणा लऊं सर्वा अंग।
हस्त कमलने वारणे, वारी जाऊं मुखार ने विंद।।१०।।

अब आपके चरण-कमलों पर मैं बलिहारी जाऊं, आपके सब अंगों पर हस्त कमल पर, मुखारबिन्द पर बलिहारी जाऊं।

वस्तर ऊपर वारी वारी जाऊं, भामणां लऊं भूखण।
नेत्र निरमलने वारणे, जेहेनी द्रष्टे फल पामिए ततखिण।।११।।

वस्त्रों पर बलिहारी जाऊं, आभूषणों पर बलिहारी जाऊं, निर्मल नैनों पर वारी जाऊं। जिनके दर्शनों से तुरन्त फल प्राप्त होता है।

जाऊं बलिहारी नासिका पर, अने दुखणां लऊं श्रवणा।
सुंदर सरूप सकोमल ऊपर, जीव लिए भामणा घणा घणा।।१२।।

नासिका पर, कानों पर, सुन्दर प्रसन्न स्वरूप पर (मेरा जीव) न्योछावर होती हूं।

सेवा करे छे बाई हीरबाई, ओछव रसोई जांहें।
अंतरगते तमे नित आरोगो, हूं लऊं भामणा घणा घणा तांहें।।१३।।

जहां हीरबाई (खेता भाई की धर्मपत्नी) सेवा करती हैं, नित्य मंगल रसोई होती है और जहां आप नित्य आरोगते (जलपान करते) थे, उस पर मैं वारी-वारी जाती हूं।

घोली घोली जाऊं ते वाणी ऊपर, जे वचन कहो छो रसाल।
साथ सकलने चरणे राखी, सागर आडी बांधो छो पाल।।१४।।

मैं आपके कहे मीठे वचनों पर बलिहारी जाती हूं। सुन्दरसाथ को अपने चरणों में बिठाकर माया के आगे पाल (बांध) बांधते थे (माया छुड़ाते थे)।

हवे सेवा करीस हूं सर्वा अंगे, दऊं प्रदखिणा रात ने दिन।
पल न वालूं निरखूं नेत्रे, वालपण करूं जीव ने मन।।१५।।

मैं अब सब अंगों से सेवा करूंगी। रात-दिन परिक्रमा दूंगी। एक पल के लिए भी आपसे जुदा नहीं होऊंगी। जीव और मन जैसे एक ही तन में रहते हैं, उसी तरह प्यार से मैं आपके साथ रहूंगी।

Nijanand App

मूं जेहेवा अजाण अबूझ दुष्ट होय अप्रीछक, अधम नीच मत हीन।
ते एणे चरणे आवी थाय जाण सिरोमण, सुघड सुप्रीछक प्रवीन।। १६ ।।

मेरे जैसे अनजान, नासमझ, दुष्ट, मूढ़, नीच और बुद्धिहीन आपके इन चरणों की कृपा से ज्ञानी, होशियार, बुद्धिमान, सुबुद्धि और चतुर बन जाते हैं।

तेना जीवने जगावी निध देओ छो निरमल, करो छो वासना प्रकास।
ते जीव वचिखिण वीर थई, चौद भवन करे अजवास।। १७ ।।

ऐसे जीवों को जागृत करके, अखण्ड ज्ञान देकर आत्मा की पहचान कराते हो। जिससे वह जीव चतुर और बलवान होकर चौदह लोकों में प्रकाश करते हैं।

हवे गुण केटला कहूं मारा वालैया, जे अमसूं कीधां आवार।
आणी जोगवाई ए न केहेवाय, पण लखवा तोहे निरधार।। १८ ।।

हे मेरे वालाजी! आपने इस बार जो कृपा की है, उन गुणों का मैं कहां तक बखान करूं? इस मनुष्य तन से उनका बखान नहीं होता है, परन्तु लिखना तो निश्चित ही है।

हवे आहीं उपमा केही दऊं मारा वालैया, ए सब्द न पोहोंचे तमने।
वचन कहूं ते ओरूं रहे, तेणे दुख लागे घणूं अमने।। १९ ।।

हे वालाजी! अब इसके ऊपर आपकी शोभा का क्या वर्णन करूं। मेरे शब्द आप तक नहीं पहुंचते और जो कहती हूं वह यहीं रह जाते हैं इसलिए मुझे अत्यन्त दुःख होता है।

एक वचने मारी दाझ भाजे छे, ज्यारे कहूं छूं धणी श्री धाम।
एक एणे वचने मारो जीव करास्यो, भाजी हैडानी हाम।। २० ।।

मेरे एक वचन "धाम के धनी" कहने में जीव की आग बुझ जाती है, जीव को शान्ति मिलती है और हृदय की चाहना मिट जाती है।

कहे इंद्रावती अति उछरंगे, फोडी ब्रह्मांड करूं प्रकास।
विगते वाट देखाडूं घरनी, जेम सोहेलो आवे मारो साथ।। २१ ।।

श्री इन्द्रावतीजी बड़ी उमंग के साथ कहती हैं कि इस ब्रह्माण्ड को फोड़ (पार) कर अच्छी तरह घर का रास्ता बताऊं जिससे मेरा सुन्दरसाथ आसानी से आ जाए।

।। प्रकरण ।। २३ ।। चौपाई ।। ५७९ ।।

नोट : यह शोभा चाकला मन्दिर की है जो ऊपर लिखी गई है। आज यह गांगजी भाई के परिवार में सम्पत्ति बंटवारे के कारण आकार में छोटा हो गया है। इस चाकला मन्दिर में ही वह आंगन था, वृक्ष था, सामान था, जिसकी महिमा का वर्णन इस प्रकरण में है और कई ऐतिहासिक पुरानी वस्तुएं आज इसी चाकला मन्दिर में हैं। स्वामीजी जब हबसा में विराजमान थे, वहां वाणी उतरी। उस समय कोई और स्थान अपना नहीं था (और किसी स्थान का वाणी में वर्णन नहीं है)।

हवे अस्तुत ऊपर एक विनती कहूं, चरण तमारा जीवने नेत्रे ग्रहूं।
एणे चरणे मूने थई छे सिध, पेहेली निध मूने सुन्दरबाईए दिध।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी इस स्तुति के बाद (जो ऊपर के प्रकरण में वर्णित है वही स्तुति है) विनती करती हैं कि हे धनी! आपके चरण जीव के नेत्रों में सदा रखूं। इन चरणों से मेरे सब कार्य सिद्ध हुए हैं। पहली निधि (तारतम ज्ञान) श्यामाजी (सुन्दरबाई) ने दिया है।

Nijanand App